जब करने के लिए कुछ न हो तो क्या करें (12:1-18, 24)

वर्षों से, मसीही लोगों के निराशात्मक स्वर सुनता आ रहा हूं, ''मुझे नहीं पता कि और क्या किया जाए। जो कुछ मैं कर सकता था वह कर चुका हूं!'' मुझे एक कहानी याद आती है जो मैंने हाल ही में पढ़ी थी। एक छोटा लड़का खेत में अपने पिता के साथ काम कर रहा था। लड़के ने एक बड़ा पत्थर हटाने का फैसला किया। पिता उस पत्थर के साथ अपने पुत्र के संघर्ष को देख रहा था, परन्तु वह उसे हिलाने में सफल नहीं हुआ था। अन्त में उसने लड़के से पूछा, ''क्या तुम अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हो?'' ''हां, डैडी,'' उसने हांफ़ते हुए कहा, ''मैं अपनी पूरी शक्ति लगा रहा हूं।'' ''नहीं, तुम अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा रहे हो,'' पिता ने उत्तर दिया। ''तुम अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा रहे हो क्योंकि तुमने सहायता के लिए *मुझे* नहीं कहा।'' जब हम अर्थात आप और मैं जीवन की बाधाओं को हटाने का प्रयत्न करते हुए अपने स्वर्गीय पिता की सहायता नहीं मांग पाते, तो कई बार हमें लगता है कि जो कुछ हम कर सकते थे, वह हमने कर लिया है। पौलुस ने लिखा:

> प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी (फिलिप्पियों 4:5ख-7)।

जब आप वह सब कुछ कर चुके हों जो आप करना जानते हैं, तो समस्या को परमेश्वर के पास ले आएं।

यह पाठ प्रार्थना की शक्ति के महत्व पर है। बाइबल की बहुत सी कहानियां प्रार्थना की विशेषता को चित्रित करती हैं। जैसे कि बुद्धि के लिए सुलैमान की प्रार्थना, एलिय्याह और साढ़े तीन वर्ष का सूखा, और हिजकिय्याह को जीने के लिए और समय मिलना। इनमें से कोई भी कहानी प्रेरितों 12 में पतरस के जेल से छूटने की कहानी से अधिक आकर्षक नहीं है।

सताव तथा बन्दीगृह (12:1-6, 10)

अध्याय 12 ''उस समय ...'' शब्दों के साथ आरम्भ होता है (आयत 1क)। यहां

''उस समय'' पिछले पाठ के अन्त की ओर इशारा है, जब अन्ताकिया के चेलों ने यह निश्चय किया कि यहूदिया में मसीहियों के लिए सहायता भेजी जाए। लगभग उसी समय,[1] ''हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों[2] को दुख देने के लिए उन पर हाथ डाले''[3] (आयत 1ख)। शाऊल के मसीही बनने से यरूशलेम की कलीसिया में शान्ति थी (9:31); जो अब भंग हो गई थी।

प्रेरितों के काम में दर्ज कलीसिया पर यह चौथा सताव था। यह पहले तीन सतावों से इस बात में भिन्न है कि यह महासभा की ओर से नहीं, बल्कि रोमी सरकार के एक प्रतिनिधि अर्थात राजा हेरोदेस के द्वारा करवाया गया था।[4] यह हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम, उस हेरोदेस महान का पोता था जिसने यीशु के जन्म के समय बच्चों की हत्या का आदेश दिया था। अध्याय 12 की घटनाओं के समय, फलस्तीन पर इसी हेरोदेस का शासन था।

रोम द्वारा नियुक्त फलस्तीन के सभी शासकों की तरह, हेरोदेस का भी कैसरिया में एक महल था, और आमतौर पर वह यरूशलेम में केवल पर्व के दिनों में ही आता था। अध्याय 12 में यरूशलेम में वह स्पष्टत: फसह के पर्व से पहले ही आया था। उस समय उसने अपनी प्रजा की स्वीकृति पाने के लिए कलीसिया पर सताव को बढ़ावा दिया। आरम्भ में कलीसिया को यरूशलेम में नागरिकों का पूरा समर्थन प्राप्त था (2:47), परन्तु अब स्थिति बदल चुकी थी। स्तिफनुस के प्रचार ने लोगों को कलीसिया के विरुद्ध कर दिया था (6:12), और हाल ही में अन्यजातियों को ग्रहण करने की बात ने शायद उनकी घृणा को और बढ़ा दिया था। अब, जनता को अपने पक्ष में करने के चक्कर में, हेरोदेस ने यीशु के अनुयायियों को सताने का फैसला कर लिया था।

एक और विस्तार इस सताव को अलग करता है। मूलत:, सभा ने प्रेरितों को गिरफ्तार किया था, परन्तु वे उन्हें जेल में रखने अथवा शान्त करने में सफल नहीं हो सके थे। उसके बाद का सताव उन बारह प्रेरितों के बजाय कलीसिया के सभी ''साधारण'' सदस्यों पर केन्द्रित था (8:1)। हेरोदेस ने एक बार फिर प्रेरितों पर ध्यान लगाया, जो उसके विचार से अपराजेय अगुवे थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन बारह में से केवल एक की हत्या करने में हेरोदेस के पहली बार सफल होने पर, कलीसिया के अन्दर और बाहर, सभी चकित थे। हेरोदेस के चाचा, हेरोदेस ऐंटिपास ने, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काटने का आदेश दिया था, और हेरोदेस ने भी वही यक्ति अपनाई। ''उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला'' (12:2)।[5]

इस चौंकाने वाली घटना को दर्ज करने में लूका का संयम आश्चर्यजनक है।[6] प्रथम प्रेरित की हत्या को बताने के लिए मूल शास्त्र में उसने केवल सात शब्दों का प्रयोग किया! याकूब को, जिसकी हत्या की गई थी, यीशु के निकटतम लोगों में से एक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।[7] उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु ने पहले ही बता दिया था, जब याकूब और यूहन्ना की माता ने, एक सांसारिक राज्य सोचकर,[8] बिनती की थी कि उसके पुत्रों को यीशु के दाईं तथा बाईं ओर के पद दिए जाएं। इस पर यीशु हैरान हो गया था। उसने याकूब और यूहन्ना को बताया, ''तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो,'' और फिर पूछने

लगा, ''जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो?'' (मत्ती 20:22)। यीशु *दुखों* के उस कटोरे की बात कर रहा था जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। याकूब और यूहन्ना ने बिना सोचे समझे उत्तर दिया, ''पी सकते हैं।'' फिर यीशु ने दुखी होकर कहा था, ''तुम मेरा कटोरा तो *पीओगे, ...*''[9] (मत्ती 20:22, 23)। वध के स्थान पर अपनी गर्दन रखते हुए याकूब के मन में यीशु के वे शब्द आए होंगे। उसने अवश्य सोचा होगा, ''मैं नहीं जानता था कि मैं क्या मांग रहा था, क्या मैं जानता था?''[10]

याकूब के सिर कटने को लोगों ने जिस प्रकार स्वीकार किया, उसी की अपेक्षा हेरोदेस ने की थी: ''उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं'' (आयत 3क)। उसने फैसला किया कि यदि तीसरे नम्बर के प्रेरित की हत्या से लोग खुश हुए, तो पहले नम्बर के प्रेरित की हत्या से तो जीवन भर के लिए प्रजा उसकी वफ़ादार बन जाएगी! ''तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया''; ''और उस ने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिए, चार-चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा'' (आयतें 3ख, 4क)।

पतरस की गिरफ्तारी के बारे में बताते हुए लूका ने एक सम्पादकीय टिप्पणी और जोड़ दी: ''वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे'' (आयत 3ग)। ''अखमीरी रोटी के दिन'' फसह के पर्व के सप्ताह भर चलने वाले अखमीरी रोटी के त्यौहार को कहा जाता था। नये नियम के समयों तक, दोनों त्यौहार आपस में मिल चुके थे और उन्हें फसह ही कहा जाता था।[11] शायद लूका अपने पाठकों को सूचित कर रहा हो कि हेरोदेस यरूशलेम में क्यों था; जैसे पहले हमने इस पर ध्यान दिया था, रोमी राज्यपाल फसह जैसे विशेष त्यौहारों के अवसर पर ही कैसरिया से यरूशलेम आते थे। शायद लूका यह भी संकेत दे रहा था कि हेरोदेस, जो कि तड़क-भड़क वाला व्यवस्थापक था,[12] उसने यरूशलेम आने के लिए ऐसा समय चुना जिसमें उसे सबसे अधिक श्रोता मिल सकते थे; क्योंकि फसह के सप्ताह के दौरान यरूशलेम में यहूदियों की बाढ़ सी आई होती थी।

तथापि, फसह के निकट सताव का आरम्भ हेरोदेस के लिए गले की हड्डी बन गया। याकूब की गिरफ्तारी, ''मुकदमा,'' और हत्या में कोई कठिनाई नहीं हुई थी; सम्भवत: यह त्यौहार के तुरन्त बाद हड़बड़ी में किया गया काम था। पतरस की गिरफ्तारी के समय, त्यौहार का वातावरण था। पवित्र त्यौहार पर सार्वजनिक हत्या यहूदियों के लिए आपत्तिजनक होनी थी (मरकुस 14:2)। हेरोदेस के लिए यह एक छोटी सी रुकावट थी, और वह इसे अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर सकता था। सप्ताह भर में पूर्वाभास लगाया जाना था। फिर, ''फसह[13] के बाद,'' उसने ''उसे लोगों के साम्हने'' लाना था (प्रेरितों 12:4ख)। हेरोदेस ने, पतरस के वध के लिए वही योजना बनाई थी जिससे उसने याकूब का वध किया था (12:11)।[14]

त्यौहार के सात दिनों के दौरान, हेरोदेस ने पतरस को बचने का कोई अवसर नहीं दिया। उसने यरूशलेम में रोमी जेल को[15] अधिकतर सुरक्षा वाली जेल में परिवर्तित कर दिया। साधारणतया, किसी राजनीतिक कैदी को केवल जेल में ही रखा जाता था। पतरस को काल-कोठरी में, उसके और स्वतन्त्रता के बीच ताला लगे तीन फाटकों के अन्दर रखा

गया था (आयत 10)। आम तौर पर, किसी राजनीतिक कैदी के लिए विशेष पहरेदार नहीं लगाए जाते थे; या, यदि लगाए भी जाते थे, तो कैदी की रखवाली एक समय में केवल एक ही करता था। परन्तु, हेरोदेस ने पतरस को ''पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिए, चार-चार सिपाहियों के *चार पहरों* में रखा'' (आयत 4क)। *सोलह सिपाही* पतरस की रखवाली के लिए नियुक्त किए गए थे। (चार-चार सिपाहियों का एक दल तीन घण्टे की शिफ्ट लगाता था।) फिर, अधिकतर मामलों में, रात के समय *एक* सिपाही को कैदी के साथ बांध दिया जाता था; लेकिन पतरस को हर रात *दो* सिपाहियों के बीच हथकड़ी से बांधा जाता था (आयत 6)। तीसरा सिपाही जेल के फाटक के बाहर खड़ा रखवाली करता था, जबकि चौथा भीतरी और बाहरी फाटक की निगरानी के लिए खड़ा था (आयत 10)। यह सब सामान्य सुरक्षा के अतिरिक्त था। मानवीय परिप्रेक्ष्य से, पतरस के लिए बचना *असम्भव* था। मैं हेरोदेस को सभा में बनावटी मुस्कान से यह कहते हुए कल्पना कर सकता हूं, ''सुना है कि पतरस को जेल में रखकर तुम्हें बड़ी मुश्किल आई थी। *मैं* तुम्हें दिखाता हूं कि यह काम कैसे किया जाता है!''

याकूब की कब्र के पास खड़े शोक करने वालों पर दूर तक नज़र घुमाइए, और फिर कैद में रखे पतरस पर ध्यान दें। अपने मन में इन विचारों को रेखांकित कर लें: मसीहियों को कठिनाइयां आती हैं, लगता है कि इस जीवन में दुष्ट लोग जीत जाते हैं। हमें इन वास्तविकताओं का सामना करना होगा। ये वास्तविकताएं पहली सदी में भी थीं; और आज भी हैं। परन्तु, अपनी बाइबल पर दृष्टि डालें और ध्यान दें कि हमने अध्याय 12 की केवल कुछ ही आयतों की समीक्षा की है। कहानी अधूरी है! किसी उपन्यास के आरम्भिक पन्नों पर कथानक थका देने वाला होता है; परन्तु यह जानने के लिए कि कहानी का अन्त क्या था, अन्तिम पृष्ठ तक पढ़ना आवश्यक है। हो सकता है कि आपकी परिस्थिति पतरस जैसी ही असम्भव लगती हो, परन्तु परमेश्वर के पास यह ही अन्तिम बात नहीं थी! जब आपके जीवन में समस्याएं तथा परीक्षाएं आती हैं, तो दूरदृष्टि से देखिए। प्रभु पर भरोसा रखें!

प्रार्थना व धैर्य (12:5, 6, 12)

कलीसिया का एक सम्मानित अगुआ कैद में था; ऐसी स्थिति में सदस्य क्या कर सकते थे? कई बार, इस देश के प्रतिनिधियों को अन्य देशों में राजनीतिक बन्दी बनाकर कैद में डाला गया।[16] ऐसा होने पर सारा राष्ट्र क्रोधित हो उठता है, और अपने नागरिकों को छुड़ाकर लाने के लिए जटिल योजनाएं सुझाई जाती हैं। कलीसिया इन युक्तियों को बनाने का यत्न कर सकती थी। क्रोध भरी बातें की जा सकती थीं; जेलें भरने के लिए सभी नर मसीहियों को इकट्ठा किया जा सकता था। स्पष्ट बात यह है कि इनमें से कोई भी बात सकारात्मक परिणाम देने वाली न होती। मानवीय दृष्टिकोण से, वे कुछ भी *नहीं* कर सकते थे।

जब करने के लिए कुछ भी नहीं था तो कलीसिया ने क्या किया? हथियार उठाने के बजाय, वे घुटनों के बल हो गए। ''सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिए लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी'' (आयत 5)। सारे

शहर के सदस्य इस प्रेरित के लिए प्रार्थना करने के लिए घरों में इकट्ठे हो गए; वे हर दिन, और हर रात उसके लिए प्रार्थना करते रहे (आयत 12)। हेरोदेस ने जेल के फाटक बन्द कर दिए थे, परन्तु वह स्वर्ग के द्वार बन्द नहीं कर सका।

पहली बार विचार करने पर, यह तथ्य कि कलीसिया लगातार प्रार्थना कर रही थी शायद प्रभावशाली न लगे, परन्तु दोबारा विचार कीजिए। प्रार्थना में लगे रहने के लिए कलीसिया को बहुत सी बाधाओं को पार करना था। जिनमें से *निराशा* भी एक थी। आपको नहीं लगता कि कलीसिया ने याकूब के लिए प्रार्थना की होगी? याकूब का पकड़ा जाना और उसकी हत्या चाहे कितनी भी जल्दी में हुई हो, यकीनन ही बहुत से लोगों ने उसके लिए प्रार्थना की होगी। उनके मन में यह विचार आना स्वाभाविक था, ''जब हम ने याकूब के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे नहीं बचाया, तो पतरस के लिए प्रार्थना करने पर वह उसे क्यों बचाएगा?'' फिर, *देरी* की बाधा भी थी। उन्होंने पतरस के लिए कम से कम सात दिन तक प्रार्थना की (आयत 6), लेकिन कुछ भी नहीं हुआ था। उनके लिए प्रार्थना से मुंह मोड़ना कितना आसान होगा! इतना सब करने के बाद, *उत्साह भंग* होने की बाधा थी। कलीसिया को एक के बाद एक झटका लगा था। एक प्रेरित की हत्या हो चुकी थी, और दूसरा जेल में था। सेना की पूरी शक्ति उनके विरुद्ध तैनात की गई थी। कुछ भी अपने पक्ष में नहीं लग रहा था; हतोत्साहित होना उनके लिए आसान होगा ... फिर भी वे प्रार्थना करते रहे।

काश मुझे सही-सही पता होता कि विश्वासी भाई क्या प्रार्थना करते थे। परमेश्वर ने एक बार पहले भी इस प्रेरित को चमत्कारी ढंग से छुड़ाया था (5:19, 20), सो हो सकता है कि उन्होंने प्रार्थना की हो कि फिर से ऐसा हो जाए। (निस्संदेह, याकूब हेरोदेस की जेल से नहीं छूटा था, सो उन्हें कोई आश्वासन नहीं मिला था कि पतरस छूट ही जाएगा।) यीशु के मुकदमे के समय पतरस का विश्वास डगमगा गया था, इसलिए हो सकता है कि उन्होंने प्रार्थना की हो कि जब उसका सिर काटने के लिए रखा जाए तो उसका विश्वास न डगमगाए। (दूसरी ओर, पिन्तेकुस्त के दिन से अब तक, उस समय भी जब शक्तिशाली सभा ने उसे धमकाया, तो पतरस लड़खड़ाया नहीं था। इसलिए उसके पीछे हटने का प्रश्न ही नहीं था।) यह भी हो सकता है कि प्रार्थना करने वालों ने अलग-अलग प्रार्थना की हो। हो सकता है कि कइयों को यह भी पता न हो कि किसके लिए प्रार्थना करनी है (रोमियों 8:26)। इसलिए, उन्होंने सब कुछ परमेश्वर के हाथ में छोड़ दिया था। उनकी प्रार्थना चाहे *कुछ भी* हो, परन्तु उन्हें मालूम था कि उनकी एकमात्र आशा परमेश्वर ही है।

उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर और पतरस के छूटने के बारे में देखने से पहले, आइए अपना ध्यान एक पल के लिए जेल के अन्दर ले जाएं। आयत 6 आरम्भ होती है ''और जब हेरोदेस उसे उनके साम्हने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बन्धा हुआ, दो सिपाहियों के बीच सो रहा था।'' उस परिस्थिति पर विचार कीजिए जिसमें पतरस सो रहा था। पहली बात, यह उसके कत्ल होने से पहले की रात थी। लूका ने इस पर ज़ोर देकर कहा कि ''जब हेरोदेस उसे उनके साम्हने लाने को था, तो *उसी रात* पतरस... सो रहा था।'' मेरी देह से मेरे सिर को अलग करने से एक रात पहले क्या मैं सो रहा हूंगा?

मुझे इसमें संदेह है। परन्तु, पतरस जो दो सिपाहियों के बीच ज़ंजीरों से जकड़ा होने के कारण बड़ी मुश्किल से हिलडुल सकता था, जेल के ठण्डे, कठोर फ़र्श पर सो रहा था। फिर भी ध्यान दें, कि परिस्थिति ऐसी थी कि नींद आनी कठिन थी, परन्तु पतरस सो रहा था। वास्तव में, वह इतनी गहरी नींद में था कि परमेश्वर के दूत को उसे जगाने में थोड़ी दिक्कत पेश आई!

पतरस को नींद कैसे आ गई? इसलिए क्योंकि उसका भरोसा परमेश्वर पर था।[17] स्पष्टत: उसका विश्वास था कि जो कुछ भी होगा वह परमेश्वर की महिमा के लिए होगा, और उसे नींद आने का यही कारण था। इसलिए, जब उसे पकड़कर रखने वालों ने कहा कि सो जाते हैं, तो वह उनके बीच ठण्डे फ़र्श पर, प्रार्थना करता हुआ सो गया। जीवन में कोई कठिनाई आ जाने पर जब हमारी नींद उड़ जाती है, तो अक्सर नींद आने के लिए सबसे अच्छा सहायक सर्वशक्तिमान पर पूरा भरोसा होना है। भजन लिखने वाले ने लिखा है, ''मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है'' (भजन संहिता 4:8)। जेल के भीतर तथा बाहर पतरस और कलीसिया, दोनों की प्रार्थना तथा धैर्य मसीहियों की विशेषता थी।

सामर्थ व विकास (12:6-17, 24)

यद्यपि हमें वह न मिले जिसके लिए हमने प्रार्थना की थी, परन्तु निरुत्तर प्रार्थना और धैर्य का पुरस्कार परमेश्वर से हमेशा मिलता है। अगली कुछ आयतें प्रार्थना की सामर्थ की नाटकीय कहानी बताती हैं:

> और जब हेरोदेस उसे उन के साम्हने लाने को था, तो उसी रात पतरस जो ज़ंजीरों से बन्धा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था: और पहरुए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ: और उस कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया, और कहा; उठ फुरती कर, और उसके हाथों से ज़ंजीरें खुलकर गिर पड़ीं (आयतें 6, 7)।

कई लोग जो बाइबल के आश्चर्यकर्मों में विश्वास नहीं करते, वे जेल की अंधेरी कोठरी की बात को ''झूठा ठहराने'' का प्रयास करते हैं। उनके मुताबिक, '' 'स्वर्गदूत' शब्द, का अर्थ केवल 'संदेशवाहक' है और यह कोई *मानवीय* संदेशवाहक हो सकता है। सम्भवत: मसीहियों ने किसी पहरेदार को घूस दी होगी जो पतरस को जेल से निकाल सकता होगा।'' कितनी मूर्खता की बात है! जो आयत हमने अभी पढ़ी उसे फिर से देखें। जब संदेशवाहक पहुंचा, तो उसने जो सबसे पहला काम किया, वह था कोठरी में ज्योति करना। फिर उसने पतरस को जगाते हुए और उसकी ज़ंजीरें खोलते हुए शोर किया। क्या किसी आदमी को चुपके से जेल से निकालने का ऐसा कोई ढंग है? कहानी को जारी रखते हुए, हम देखेंगे कि यह चतुर मसीहियों द्वारा जेल को तोड़ने की योजना *नहीं* थी।

यह सत्य है कि ''स्वर्गदूत'' शब्द का अर्थ ''संदेशवाहक'' है, परन्तु पतरस 100 फीसदी सही था जब उसने कहा ''कि *प्रभु ने* अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदस के हाथ से छुड़ा लिया'' (आयत 11)।[18]

कहानी में नम्रता के स्पर्श देखे जा सकते हैं। जब प्रभु का दूत कोठरी में आया, तो उसे पतरस को जगाने और हिलाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। उसने पतरस की पसली पर हाथ मारकर उसे कहा था, ''उठ, फुरती कर।'' पतरस के उठते-उठते, जो कि नींद में ही था, उसके हाथों से ज़ंजीरें खुल कर, फ़र्श पर गिर पड़ीं (आयत 7)। फिर, ''स्वर्गदूत ने उस से कहा; कमर बान्ध, और अपने जूते पहिन ले:[19] उस ने वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा; अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले'' (आयत 8)। मुझे वे दिन याद आते हैं जब हमारी लड़कियां छोटी थीं और हम उन्हें वर्दी पहनाने की कोशिश करते थे जबकि वे नींद में ही होती थीं: ''बाजू इधर से डालो ... नहीं, वहां तो सिर डालते हैं ... सीधे रहो ... गिरो मत! ... आंखें खोलो ... हां, मैं भी नींद में हूं ... चलो अब दूसरी बाजू डालते हैं ...।''

स्वर्गदूत ने जो भी कहा, पतरस ने वह नींद में ही किया और स्वर्गदूत के पीछे हो लिया, परन्तु आयत 9 ध्यान दिलाती है कि ''वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था, कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सचमुच है, बरन यह समझा, कि मैं दर्शन देख रहा हूं।'' क्या आपको कभी इतना सुखद सपना आया है कि आपको जागना ही न पड़ा हो? जब मैं एक अकुशल, बेतरतीब सा जवान लड़का था, तो अक्सर सपने देखा करता था कि मैं एक जगह से दूसरी जगह *उड़कर जा* सकता हूं।[20] वास्तविकता में नींद खुलने पर मुझे कितनी निराशा होती थी! मन में अपनी हत्या के विचारों में झूलता हुआ पतरस सो गया था। अब, जब नींद में चलते हुए वह पहरेदारों के पास से गुज़र गया जिन्होंने उसे देखा तक नहीं था, तो यह सब कुछ स्वप्न के जैसा ही था। मैं कल्पना करता हूं कि वह सोच रहा था, ''ये मेरे सब से अच्छे स्वप्नों में से एक है! काश मेरी नींद *कभी न* खुले!''

पतरस और स्वर्गदूत एक फाटक से होते हुए दूसरे फाटक से निकले। ''तब वे पहिले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे, जो नगर की ओर है'' (आयत 10क)। यह लोहे का फाटक बहुत बड़ा था; जिसे खोलने के लिए बहुत से हृष्ट-पुष्ट आदमियों की ज़रूरत होती थी।[21] जब पतरस और स्वर्गदूत फाटक के पास पहुंचे, तो ''वह उन के लिए आप से आप खुल गया'' (आयत 10ख)। यूनानी शब्द जिसका अनुवाद ''आप से आप'' हुआ है, वही है जिससे हमें ''स्वत:'' शब्द मिला है। बिना शोर किए स्वत:, इतना बड़ा फाटक उनके सामने खुल गया।

पतरस के छुटकारे में मैं कम से कम सात स्पष्ट आश्चर्यकर्म गिनता हूं: (1) स्वर्गदूत प्रकट हुआ, (2) कोठरी में ज्योति चमकी, (3) ज़ंजीरें खुल गईं, (4) जिनके साथ पतरस बन्धा हुआ था, वे नहीं जागे, (5) वे एक पहरेदार के पास से निकल गए, परन्तु उसे पता न चला, (6) वे दूसरे पहरेदार के पास से निकल गए, परन्तु उसे भी पता न चला, (7) बाहर का फाटक अपने आप खुल गया। सम्भवत: इन सात आश्चर्यकर्मों में दूसरे फाटकों का खुलना, जेल की साधारण रक्षाबन्दी के पास से गुज़रना, आदि भी जोड़े जा सकते हैं। संख्या

महत्वपूर्ण नहीं है। जो बात महत्वपूर्ण है वह यह है कि परमेश्वर ने अपने लोगों की सुनी और उसका उत्तर इस ढंग से दिया जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

बाहर का फाटक खुलने के बाद पतरस और स्वर्गदूत वहां से निकल गए[22] ''और वे निकलकर एक ही गली होकर गए'' (आयत 10ग)। ''वे कुछ ही दूर गए थे,'' कि अचानक ''स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया'' (आयत 10घ)। पतरस स्तब्ध खड़ा रहा। फिर शाम की ठण्डी हवा उसके मुख पर लगी। उसे पता चला कि उसके आस-पास घर हैं और आकाश तारों से भरा हुआ था। ''तब पतरस ने सचेत होकर कहा; अब मैंने सच जान लिया है कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी'' (आयत 11)।

स्वर्गदूत ने उसे यहां लाकर क्यों छोड़ा? क्योंकि परमेश्वर हमारे लिए वह काम नहीं करता जो हम स्वयं कर सकते हैं। पतरस को अब स्वयं कुछ करना था। उसने एक योजना बनाने का फैसला किया। पहले वह भाइयों को सूचित करेगा कि वह स्वतन्त्र हो चुका है, और फिर छिपने का स्थान ढूंढ़ेगा।[23]

''और यह सोचकर (कि उसे सचमुच परमेश्वर ने छुड़ाया था), वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर[24] आया, जो मरकुस कहलाता है''[25] (आयत 12क)। पतरस ने उस घर में बहुत समय बिताया था[26] और उसे यकीन था कि वहां उसे साथी मसीही मिलेंगे चाहे आधी रात ही क्यों न हो चुकी हो। (और वह सही था, क्योंकि उस घर में ''बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे'' [आयत 12ख])। यूहन्ना मरकुस नामक एक जवान के आकस्मिक परिचय पर ध्यान दें, जो प्रेरितों के काम के बाद के अध्यायों में प्रमुख पात्र होगा। यूहन्ना मरकुस स्पष्टत: पतरस द्वारा मसीही बनाया गया था, क्योंकि पतरस ने बाद में उसे अपना आत्मिक ''पुत्र'' कहा है (1 पतरस 5:13)।

यरूशलेम की अंधेरी गलियों से जाते हुए, पतरस को अभी भी ख़तरा था। अन्त में वह मरियम के घर पहुंचा ''जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई,[27] तो रूदे[28] नामक एक दासी[29] सुनने को आई'' (आयत 13)। क्योंकि हेरोदेस कलीसिया के सदस्यों को ''दुख देने के लिए'' (आयत 1क) हाथ डाल रहा था, इसलिए आधी रात को द्वार खटखटाने का अर्थ हो सकता था कि रोमी सिपाही बाहर उन लोगों को गिरफ्तार करने आए हों जो अन्दर थे। रूदे ने सम्भवत: खिड़की में से फुसफुसाया, ''कौन है?'' मैं पतरस के उन्मत्त उत्तर की कल्पना कर सकता हूं: ''मैं हूं पतरस! जल्दी करो! मुझे अन्दर आने दो!''

लूका का वृत्तांत फिर मनोदशा से परिपूर्ण है जब उसने प्रकट किया कि पहले मसीही भी वैसे ही इन्सान थे जैसे हम हैं। ''और पतरस का शब्द पहचानकर, उस ने आनन्द के मारे[30] फाटक न खोला'' (आयत 14क)। प्रेरित को बाहर खड़ा छोड़ वह ''दौड़कर भीतर गई, और बताया, कि पतरस द्वार पर खड़ा है'' (आयत 14ख)। पतरस के लिए प्रार्थना सभा में जाने से जेल से बाहर आना अधिक आसान था!

मरियम के घर बैठे लोगों ने इस समाचार पर क्या प्रतिक्रिया दिखाई होगी कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दे दिया था? मैंने आरम्भ में सुझाव दिया था कि हम सही-सही

नहीं जानते कि उन्होंने क्या प्रार्थना की थी। यदि उन्होंने पतरस के छुटकारे के अलावा कोई और प्रार्थना की थी, तो परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर उन्हें वह चीज़ देकर दिया जो उससे *अच्छी* थी जिसके लिए वे प्रार्थना कर रहे थे। कोई चाहे इसे कैसे भी देखे, परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर अद्‌भुत ढंग से दिया था! आयत 15 उनकी प्रतिक्रिया के बारे में बताती है: ''उन्होंने उससे कहा; तू पागल है!'' मैं अक्सर कहता हूं (मज़ाक में) कि यदि मेरे पास यह जानने का कोई और ढंग न होता कि ये मेरे भाई थे, तो इस अवसर पर उनकी प्रतिक्रिया मुझे कायल कर देती कि वे थे, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और जब परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया तो वे हैरान रह गए!

उनकी प्रतिक्रिया (और बहुत बार हमारी भी) मुझे एक पुरानी कहानी की याद दिलाती है। एक आदमी ने एक छोटे नगर में पहला मयखाना खोलने की अनुमति प्राप्त कर ली। स्थानीय कलीसिया के सदस्य मयखाने के घोर विरोधी थे, सो वे प्रार्थना करने लगे कि परमेश्वर उसमें हस्तक्षेप करे। मयखाने के खुलने के लिए निर्धारित समय से कुछ दिन पूर्व, बिजली उस इमारत पर गिरी, और वह जल कर राख हो गई। कलीसिया के लोग हैरान थे परन्तु खुश भी थे जब तक उन्हें यह नोटिस न मिला कि मयखाने का मालिक उन पर मुकदमा कर रहा था। उसने दावा किया कि इमारत के जलने के लिए उनकी प्रार्थनाएं ज़िम्मेदार थीं। उन्होंने इस आरोप का खण्डन किया। आरम्भिक सुनवाई के अन्त में, न्यायाधीश राइली ने टिप्पणी की, ''मुझे नहीं मालूम कि मेरा निर्णय क्या होगा, परन्तु ऐसा लगता है कि मयखाने का मालिक प्रार्थना की सामर्थ में विश्वास रखता है जबकि कलीसिया के ये लोग नहीं।''

घर में दूसरे लोगों के अविश्वास से रूदे हताश नहीं हुई। ''वह दृढ़ता से'' कहने लगी कि पतरस सचमुच बाहर फाटक पर खड़ा है (आयत 15क)। आखिर, उन्हें मानना पड़ा कि कोई वहां होगा जिस कारण उन्हें एक आश्चर्यजनक ''व्याख्या'' देनी पड़ी कि ''उसका स्वर्गदूत होगा'' (आयत 15ख)![31] कोई स्वर्गदूत द्वार क्यों खटखटाएगा? जे.डब्ल्यू. मैक्गार्वे की उनके शब्दों की व्याख्या किसी भी अच्छी व्याख्या की तरह है:

> उनके द्वारा उसे देखने से पूर्व, यह विचार, कि उसका दूत होगा, इस मान्यता पर आधारित है कि हर व्यक्ति का एक दूत है, जो कि पूरी तरह से शास्त्र के अनुसार है [मत्ती 18:11; इब्रानियों 1:4] और यह दूत कई बार उस व्यक्ति के स्वर और रूप को अपना लेता है, जो नि:संदेह एक अंधविश्वास है।

क्या इससे यह लगता है कि कलीसिया ने पतरस को जेल से निकालने के लिए व्यापक योजनाएं बनाई थीं? उन्हें विश्वास नहीं था कि वह कभी जेल से छूटेगा भी, और जब वह छूट गया तो उन्हें इस पर विश्वास नहीं हो रहा था!

इतनी देर तक, ''पतरस खटखटाता ही रहा'' (आयत 16क)। अन्त में, अन्दर बैठे लोगों ने उसकी आवाज़ सुनी (अब तक सम्भवत: पतरस फाटक पर *निरन्तर कोशिश* कर रहा था) और देखने गए कि कौन है। ''सो उन्होंने खिड़की खोली, और उसे देखकर

चकित हो गए'' (आयत 16ख)। बहुवचन शब्द ''उन्होंने'' पर ध्यान दें। मैं उनमें बातचीत होने की कल्पना कर सकता हूं: ''जाकर देखो कि कौन है''; ''नहीं, *तुम* जाओ।'' अन्त में, उन्होंने एक साथ जाने का निर्णय लिया। मैं उन्हें हड़बड़ी में जमा होते, भयभीत होकर फाटक की ओर जाते, और द्वार खोलते हुए देख सकता हूं। जब उन्होंने देखा कि यह सचमुच पतरस ही है, तो वे ''चकित हो गए''!

स्पष्टत:, वे ख़ुशी से पुकार उठे, क्योंकि पतरस ने ''उन्हें हाथ से सैन किया,[32] कि चुप रहें'' (आयत 17क)। शोर पहले ही बहुत हो रहा था; यह समझदारी नहीं होनी थी कि उनके यहूदी पड़ोसियों को पता चल जाए कि पतरस बच गया है। पतरस ने फिर ''उन को बताया, कि प्रभु किस रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया है'' (आयत 17ख)। यद्यपि अविश्वासी इस बात में विश्वास न करें परन्तु पतरस के मन में किसी भी प्रकार का संदेह नहीं था, कि उसने परमेश्वर का एक बहुत ही चकित करने वाला आश्चर्यकर्म देखा है।

पतरस ने कहा, ''कि याकूब और भाइयों को यह बात कह देना[33]'' (आयत 17ग)। यह याकूब प्रेरित नहीं था (जो मारा गया था), बल्कि यह याकूब प्रभु का सौतेला भाई था,[34] जो यरूशलेम में कलीसिया का अगुआ बना था।[35] वह और अन्य प्रेरित सम्भवत: नगर के किसी दूसरे भाग की प्रार्थना सभा में थे। यह तथ्य कि पतरस ने गैर-प्रेरितों को बताया, सम्भवत: संकेत देता है कि कोई और प्रेरित यरूशलेम में नहीं था। सम्भवत: जब सताव बढ़ा तो वे प्रचार के लिए इधर-उधर निकल गए थे, या सताव के आरम्भ होने पर छिप गए थे।

मरियम के घर जाने के अपने मकसद को पूरा करने के बाद, पतरस ''निकलकर दूसरी जगह चला गया'' (आयत 17घ)। मरियम का घर सम्भवत: मसीहियों के एकत्र होने का प्रसिद्ध स्थान था और पतरस के बच निकलने के बाद उसे ढूंढ़ने के लिए सिपाही सबसे पहले वहीं आने थे। इसलिए, उसके लिए ''दूसरी जगह'' जाना अति आवश्यक था। उस ''जगह''[36] के बारे में बहुत से अनुमान लगाए गए हैं, परन्तु लूका ने हमें नहीं बताया, इसलिए, अनुमान लगाना, व्यर्थ है। यदि लूका को पता था कि यह स्थान कहां था, तो उसने उस स्थान को दर्ज नहीं किया, शायद इसलिए क्योंकि वह जानता था कि किसी और सताव के होने पर मसीहियों को इस स्थान की फिर आवश्यकता पड़ सकती है।

लूका द्वारा दर्ज पतरस के जीवन की यह अन्तिम बड़ी घटना है।[37] इसके बाद, लूका ने शाऊल/पौलुस के काम पर ध्यान केन्द्रित किया।

18 से 24 आयतें पतरस के छूटने की कहानी की कड़ी बनाती हैं। आयत 18 कहती है, ''भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी, कि पतरस का क्या हुआ।'' लूका के शब्द साहित्यिक अल्पवक्तव्य हैं। क्या आप उन सिपाहियों के अविश्वास की कल्पना कर सकते हैं जो पतरस के साथ बन्धे हुए थे जब वे जागे और पाया कि वह जा चुका है? अंगुलियां सभी ओर उठी होंगी: ''तुम सो गए होगे''; ''नहीं, तुम ही ने उसे भगाया है।'' आयत 19 टिप्पणी करती है कि जब हेरोदेस को बताया गया कि पतरस बचकर निकल गया है, तो उसने सभी सिपाहियों को मरवा डाला। यह और प्रमाण है कि पहरेदारों ने घूस नहीं ली होगी क्योंकि हर सिपाही को किसी कैदी को भगाने के अपराध का पता ही होगा।

अगले पाठ में हम कहानी के शेष भाग का अध्ययन करेंगे। तथापि, इस पाठ को समाप्त करने से पहले हम आयत 24 की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं, क्योंकि यह पतरस के छूटने की कहानी का उचित अन्त है: ''परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।'' तात्पर्य यह है कि जब वचन बढ़ा और फैला, तो वचन पर प्रतिक्रियाएं भी उसी प्रकार से हुईं। एक बार फिर, कलीसिया का नाश करने के शैतान के प्रयास उसको ही जला रहे थे; मसीहियों के स्वर शान्त होने के बजाय और मज़बूत हो गए। कलीसिया दृढ़ता से गिनती में बढ़ती गई। यदि हम वैसे ही प्रार्थना करें जैसे हमें करनी चाहिए, तो हो सकता है कि हम भी वैसे ही बढ़ें जैसे हम बढ़ना चाहते हैं।

सारांश

इस पाठ में, मैंने सुझाव दिया है कि जब (स्पष्टतया) आप प्रार्थना के अलावा और कुछ नहीं कर सकते तो आपको क्या करना चाहिए। अपने घुटनों के बल हो जाएं, और फिर मामले को उसके योग्य हाथों में सौंप दें। तथापि, मैं यह प्रभाव नहीं छोड़ना चाहता कि असम्भव परिस्थितियों में केवल प्रार्थना ही की जाए, और जब आप निराश हो चुके हों तो केवल प्रार्थना ही करें। जब आपको कोई चुनौती मिलती है, तो आपको प्रार्थना के साथ आरम्भ करना चाहिए, प्रार्थना में लगे रहना चाहिए, और प्रार्थना के साथ समाप्त करना चाहिए। आरम्भिक कलीसिया का जीवन प्रार्थना से भरा हुआ था; हमारे अपने जीवन भी प्रार्थना से भरे होने चाहिए।

प्रेरितों 12 में प्रार्थना के सम्बन्ध में एक अन्तिम सबक है जिसे हमें भूलना नहीं चाहिए और वह यह है कि परमेश्वर चाहे जो भी जवाब दे हमें हर हाल में खुश रहना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर को अधिक पता है। बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग इस प्रश्न से जूझते रहे हैं कि ''परमेश्वर ने पतरस को ही मृत्यु से क्यों बचाया, याकूब को क्यों नहीं?'' इसका एक उत्तर यह भी हो सकता है कि परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में, याकूब की *मृत्यु* अधिक उपयोगी होगी,[38] जबकि पतरस का *छूटना* अधिक लाभदायक होगा। यह उत्तर नि:संदेह सही है, लेकिन मैं इस बारे में कुछ और सोचता हूं, हो सकता है कि हम गलत प्रश्न पूछ रहे हों। शायद हमें यह पूछना चाहिए, कि ''परमेश्वर के घर में जाने वाला पहला प्रेरित होने का सम्मान याकूब को ही क्यों मिला, जबकि परमेश्वर की उपस्थिति में स्वागत के लिए पतरस को कई वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी?'' जिस प्रकार आम तौर पर हम प्रश्न पूछते हैं वह इस बात का प्रमाण है कि हम वस्तुओं को वैसे नहीं देखते जैसे परमेश्वर देखता है। भजन लिखने वाले ने इस प्रकार कहा है, ''यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है'' (भजन संहिता 116:15)। कड़ी धूप में महल के बाहर परिश्रम करती हुई किसानों की टोली की कल्पना करें। समय-समय पर, महल का फाटक खुलता है और एक श्रमिक को अन्दर बुला लिया जाता है। महल के अन्दर प्रवेश करने वाले के लिए; बाहर वाले शोक नहीं करेंगे बल्कि, उन्हें अपने आप पर अफसोस होगा। हर कोई यही कहेगा, ''*मैं* क्यों नहीं जा पाया?'' मेरा कहने का भाव यह है कि चाहे परमेश्वर हमारी

प्रार्थनाओं के लिए स्पष्ट रूप से ''न'' कहे (जैसे उसने याकूब के मामले में किया) या ''हां'' (जैसे उसने पतरस के मामले में किया), परन्तु उसका प्रत्येक उत्तर बिल्कुल सही है, चाहे उस समय हम उसे देख पाएं या नहीं।

आइए प्रभु पर भरोसा रखना सीखें और ''निरन्तर प्रार्थना में लगे'' रहें (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।[39]

विज़ुअल-एड नोट्स

इस पाठ का इस्तेमाल कक्षा में करने के लिए मैं बोर्ड पर चित्रों की एक सरल सी शृंखला बना लेता हूं। पहले, पतरस को स्वतन्त्रता से दूर करने की बाधा को दिखाते हुए और यह ज़ोर देते हुए कि मनुष्य के लिए यहां से उसको बचा पाना असंभव था, मैं जेल का चित्र बनाता हूं।

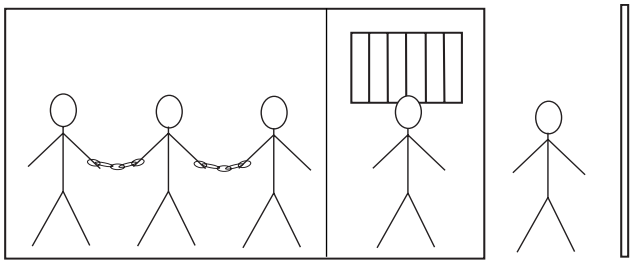

प्रथम द्वार द्वितीय द्वार लोहे का द्वार

फिर, मैं मरियम के घर का चित्र बनाता हूं, जहां पर बहुत से मसीही एकत्र थे, और विचार कर रहे थे कि वे पतरस को कैसे छुड़ा सकते हैं (जेल को तोड़कर या किसी अन्य ढंग से)।

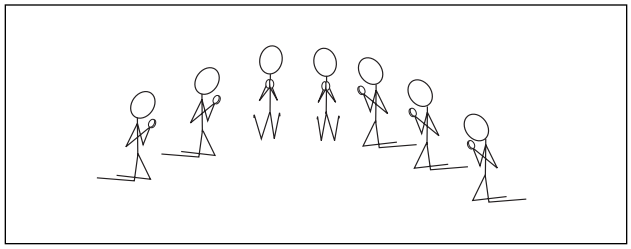

अन्त में, मैं ध्यान दिलाता हूं (1) कि मसीही लोग प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के पास गए थे, (2) परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा जिसने पतरस को छुड़ा लिया, और (3) पतरस

फिर मरियम के घर में गया (4) जहां उसको अन्दर जाने में बड़ी कठिनाई हुई थी!

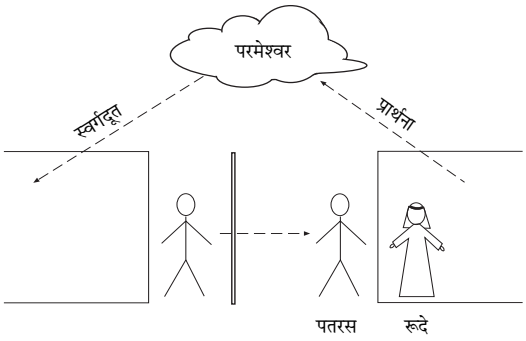

इन आसान दृश्यों को किसी पोस्टर पर या कपड़े पर भी उतारा जा सकता है।

प्रवचन नोट्स

वारेन वियर्सबे ने सुझाव दिया है कि शायद 1 पतरस 3:12 लिखते समय पतरस के मन में अपना चमत्कारी छुटकारा था। वियर्सबे ने प्रेरितों 12 को संक्षिप्त करने के लिए उस आयत के शब्दों का इस्तेमाल किया: (1) परमेश्वर हमारी परीक्षाओं को देखता है (पद 1-4): ''क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं।'' (2) परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएं सुनता है (पद 5-17): ''और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं।'' (3) परमेश्वर हमारे शत्रुओं से निपटता है (पद 18-25): ''परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।''

पाद टिप्पणियां

[1]हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम 44 ईस्वी में मर गया, इसलिए यरूशलेम में उसके द्वारा कलीसिया को सताया जाना अवश्य ही 43 के अन्त या 44 ईस्वी के आरम्भ में हुआ होगा। यदि अन्ताकिया का चन्दा ''उसी समय'' आया, तो अन्ताकिया के चेलों ने अकाल के आने से *पहले* वह चन्दा भेजा था (अकाल पर विवरण के लिए पिछला पाठ देखिए)। [2]मूल यूनानी में ''कलीसिया के कई व्यक्तियों'' है। [3]बहुत से लोगों का मानना है कि केवल याकूब और पतरस को ही जेल में डाला गया था; परन्तु यदि भाषा को अक्षरश: लिया जाए, तो लगेगा कि कलीसिया के अन्य सदस्यों को भी गिरफ्तार किया गया था। यदि ऐसा है, तो वे कौन थे और उनका क्या हुआ, हमें नहीं पता। [4]पृष्ठ 180 पर चार्ट ''हेरोदेस का घराना'' देखिए। [5]स्तिफनुस को पथराव करके मारा गया था, और याकूब का सिर काट दिया गया था। यह तथ्य कि हत्या के बहुत से ढंग व्यवहार

में लाए जाते थे इसे और महत्वपूर्ण बना देता है कि यीशु की मृत्यु पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार *क्रूसारोहण* से हुई। [6]लूका का संयम उसे आत्मा की प्रेरणा होने का प्रमाण है। परमेश्वर वैसे नहीं लिखता जैसे मनुष्य लिखता है। मनुष्य अपनी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए लिखता है; परमेश्वर केवल वही लिखता है जो मनुष्य के प्राण के उद्धार के लिए आवश्यक है। [7]पतरस और यूहन्ना दो और थे। [8]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 32 पर 1:6 पर नोट्स देखिए। [9]यूहना ने बाद में दुख का कटोरा पीया जब उसे पतमुस के टापू पर देश निकाला दिया गया था (प्रकाशितवाक्य 1:9)। जहां तक हम जानते हैं, यूहन्ना एक शहीद की मौत नहीं मरा। [10]हमें कोई संकेत नहीं मिलता कि याकूब के मरने के बाद किसी और का चयन किया गया हो। नया नियम ''प्रेरिताई के चलते रहने'' की शिक्षा नहीं देता है।

[11]यहूदियों के तीन बड़े त्यौहारों के विषय में ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 2:1 पर नोट्स देखिए। [12]पृष्ठ 49 पर 12:21 पर नोट्स देखिए। [13]KJV का ''अनुवाद'' ''*ईस्टर के बाद*'' अजीब है, यद्यपि ''फसह'' के लिए यूनानी शब्द स्पष्ट है और KJV में ही दूसरी हर जगह इसका अनुवाद ''फसह'' हुआ है। किसी ने इस गलत अनुवाद को अनुवादकों की ओर से अंग्रेज़ी कैलेंडर के शब्दों में फसह के त्यौहार को लाने का प्रयास किया। यदि यह सत्य है, तो उन्होंने ''फसह'' का अनुवाद हर जगह ''ईस्टर'' क्यों नहीं किया? हम अनुवादकों के प्रयोजन को नहीं जानते; शायद मनुष्य द्वारा ठहराया गया ईस्टर का उत्सव उन दिनों इतना महत्वपूर्ण था कि उन्होंने चाहा कि इस शब्द को बाइबल में शामिल कर लिया जाए। [14]लिविंग बाइबल की व्याख्या में है कि ''हेरोदेस की नीयत फसह के बाद पतरस को हत्या के लिए यहूदियों के हाथ सौंपने की थी।'' [15]जेल संभवत: अंटोनियो के किले में थी (21:34; 22:24)। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 196 पर यरूशलेम का मानचित्र देखिए। [16]बहुत से देशों में इस प्रकार के अनुभव हो चुके हैं। यहां पर कोई स्थानीय उदाहरण दिया जा सकता है। [17]शायद उसे यीशु का वायदा याद आया कि वह ''बूढ़ा होगा'' (यूहन्ना 21:18)। [18]आयत 17 में जो कुछ हुआ उस पर पतरस के मूल्यांकन पर भी ध्यान दीजिए। [19]अनुवादित यूनानी शब्द ''जूते'' साधारण चप्पल की ओर संकेत करता है जिसका स्ट्रैप सोल से थोड़ा बड़ा होता था। इस प्रकार के जूतों में बंदीगृह के कठोर फ़र्श पर चलने से काफी शोर होता था। यह एक और छोटा सा प्रमाण है कि साधारण तौर पर जेल तोड़ने का रिवाज़ नहीं था। [20]व्यक्तिगत स्वप्नों के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

[21]कई अधिकारियों का कहना है कि फाटक को खोलने और बंद करने के लिए आम तौर पर कम से कम पच्चीस व्यक्ति लगते थे! [22]वैस्टर्न टैक्सट में जोड़ा गया है ''और वे सात कदम अन्दर गए।'' [23]जब प्रेरितों 5 में प्रेरित चमत्कारी ढंग से जेल से छूटे थे, तो स्वर्गदूत ने उन्हें मन्दिर में जाकर प्रचार करने के लिए कहा था। इस बार ऐसा कोई निर्देश नहीं दिया गया। स्पष्टत:, इस चमत्कारी छुटकारे का उद्देश्य पतरस की जान बचाना था। इसलिए, पतरस ने छिपने के स्थान में जाने का निर्णय लिया। [24]इस घर को ''मरियम का घर'' कहा गया है, इसलिए हो सकता है मरियम विधवा हो। कई टीकाकारों का मानना है कि मरियम का घर वह अटारी वाला घर था जहां यीशु और उसके चेलों ने फसह मनाया और जहां चेले पिन्तेकुस्त के दिन ठहरे हुए थे (1:13), परन्तु यह केवल अनुमान ही है। इस तथ्य को एक बार फिर रेखांकित करते हुए कि पहले ''दान के पैसों को जमा करना'' स्वेच्छा से था, ध्यान दें कि यरूशलेम की कलीसिया के सदस्यों के पास अभी भी व्यक्तिगत संपत्ति थी। सभी मसीहियों ने अपनी सम्पत्ति नहीं बेची थी। [25]बाइबल के बहुत से व्यक्तियों की तरह, यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है, के एक से अधिक नाम थे। ''यूहन्ना'' उसका इब्रानी नाम था; ''मरकुस'' उसका रोमी (लातीनी) नाम था। [26]दो संकेत हैं कि ऐसा क्यों था (1) यूहन्ना मरकुस के साथ उसका सम्बन्ध (पाठ में ध्यान दिलाया गया) और (2) दासी द्वारा उसकी *आवाज़* को पहचानना (आयत 14)। [27]फाटक इतना बड़ा था कि उसमें से सामान से भरी गाड़ियां और लदे हुए जानवर निकल सकते थे। फाटक के बीच एक छोटा द्वार था जिस में से लोग निकल सकते थे। [28]''रूदे'' का अर्थ है ''गुलाब'' (अथवा ''छोटा गुलाब'')। [29]क्योंकि मरियम के पास इतना बड़ा घर था कि उसमें काफ़ी लोग इकट्ठे हो सकते थे, घर जिसमें आंगन (द्वार की ओर) था, और कम से कम एक दासी थी, इसलिए सम्भवत: वह वित्तीय रूप से समृद्ध थी। [30]रूदे के आनन्द से लगता है कि वह एक मसीही थी

और पतरस के लिए प्रार्थना कर रही थी।

[31]शायद उनके कहने का अर्थ था, कि ''यह उसकी *आत्मा* है।'' उन्होंने सोचा होगा कि वह मर गया है। [32]मूल यूनानी शास्त्र के अनुसार पतरस ने अपने हाथों की हथेलियां नीचे करते हुए, ''चुप होने'' का इशारा किया। [33]क्योंकि (एक आरम्भिक अप्रेरित परम्परा के अनुसार) याकूब ने एक प्राचीन के रूप में सेवा की, और क्योंकि यरूशलेम की कलीसिया में प्राचीनों/ऐल्डरों की बहुसंख्या थी (15:2, 22), इसलिए कइयों को लगता है कि ''याकूब और भाइयों'' यरूशलेम के ऐल्डरों को कहा गया है। [34]यीशु और याकूब की माता (मरियम) वही थी, परन्तु उनके पिता अलग थे (याकूब का पिता यूसुफ था; यीशु का पिता परमेश्वर था)। [35]देखिए 15:13; 21:18; गलतियों 2:9. यहां लूका ने संयोग से उन दो पुरुषों का परिचय कराया जिन्होंने नये नियम की पुस्तकें लिखीं (जो उनके नाम से जानी जाती हैं): मरकुस और याकूब। [36]कुछ लोग हमें यह विश्वास दिलाना चाहते होंगे कि यहां पर पतरस रोम में गया, जहां उसने अगले पच्चीस या अधिक वर्ष तक रोम के प्रथम बिशप के रूप में सेवा की। परन्तु, अध्याय 15 में पतरस को हम फिर यरूशलेम में पाते हैं, इसलिए स्पष्टतया यह सत्य नहीं है। कई लोग टिप्पणी करते हैं कि गलतियों 2:11 पतरस के अन्ताकिया जाने का उल्लेख करता है, और अनुमान लगाते हैं कि यह वही अवसर था। पहला कुरिन्थियों 1:12 संकेत दे सकता है कि किसी समय पतरस कुरिन्थुस में गया। बेशक, यह सम्भव है, कि पतरस को यरूशलेम या उसके आस-पास के क्षेत्र में छिपने की कोई जगह मिल गई जिसका उसके शत्रुओं को पता नहीं था। [37]पतरस एक बार फिर, थोड़ी देर के लिए, अध्याय 15 में दिखाई देगा। [38]कि बारह में से एक की मृत्यु किसी भी रूप में लाभदायक हो सकती थी, आश्चर्यजनक है क्योंकि कलीसिया को अस्तित्व में आए हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ था। यह संकेत देता है कि प्रेरित अन्य लोगों को अगुवे बनाने में आश्चर्यजनक रूप से सफल हुए थे। [39]यदि इस पाठ का प्रवचन के रूप में इस्तेमाल होता है, तो निमन्त्रण में इस बात की ओर ध्यान दिलाया जा सकता है कि बाइबल की इस कहानी में प्रार्थना की जो शक्ति दिखाई गई है वह केवल तभी आती है जब प्रार्थना करने वाले का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ सही हो। सभी को उत्साहित करें कि वे प्रभु के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों को परखें।